NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX-A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No:2581-4230
VOLUME 7, ISSUE 12, Dec. -2021

Pinki Bala W/o Ved Parkash Yadav

VPO-Khatod

Distt.-Mahendergsrh ,Haryana

हरिशंकर आदेश की सप्तशतियों में चित्रित प्रेम के विविध प्रकार

सार

प्रेम जीवन और जगत में व्याप्त मानवीय अनुभूतियों का चित्रण है । मनुष्य सामाजिक प्राणी है जिसके हृदय पक्ष में निरन्तर कोई न कोई भाव विद्यमान रहता है । प्रेम मानव की आदि एवं चिरतंन भावना है । मानव जीवन का मूलाधार प्रेम ही है। ढाई आखर प्रेम का पढै सो पंडित होय' से ही व्यापकता का ज्ञान बोध होता है । प्रेम मानव सृष्टि में भावात्मक व रागात्मक संबंधों के साथ ही ज्ञान एवं बोध का आश्रय लेकर विभिन्न रूप धारण कर लेता है ।

आदेश जी की कृति शतदल की भूमिका में डॉ० नरेश मिश्र ने प्रेम के स्वरूप को चित्रित करते हुए लिखा है – "है प्रेम जगत का सार और कुछ सार नहीं" को बीज रूप में स्वीकार करते हुए कवि आदेश ने प्रेम का बहुरंगी और मार्मिक चित्रण किया है । प्रेम की रीति निराली है, यहां सहज लगाव अनिवार्य है, तो युगीन परिवेश में चिंतन भी अपेक्षित है –

"बुझाकर मना है शिखा को जलाना,
जलाकर शिखा को बुझाना मना है ।
वृथा आज है यत्न आदेश सारे,
कृपण से यहां दिल लगाना मना है ।।"

मानव–प्रेम, वात्सल्य–प्रेम, दांपव्य–प्रेम के नैसर्गिक रूपों के साथ प्रकृति–प्रेम, संस्कृति–प्रेम, देश–प्रेम तथा भाषा प्रेम आदि के विविध रूपों का चित्रत आदेश के काव्य की शोभा बढ़ाते हैं ।

आदेश जी ने अपने सम्पूर्ण वाङ्मय में प्रेम को सर्वोपरि माना है । वह प्रेम प्रकृति से लेकर मानवीय सम्बन्धों पर आधारित रहता है । आदेश सहृदय कवि हैं इसलिए उनके समग्र साहित्य में प्रेम के विविध स्वरूपों का मनोहारी चित्रण व्याप्त है ।

सप्तशतियों में चित्रित प्रेम के विविध प्रकार – महाकवि आदेश जी की सम्पूर्ण काव्य–कृतियों में प्रेम की विविधता के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभक्त कर सकते हैं ।

(क) प्राकृतिक – प्रकृति की नैसर्गिक छटा प्रारंभ से ही सामाजिक, कवि को आकर्षित करती है । प्राकृतिक दृश्य इतने मनोहारी हैं कि मानव चित्त सब कुछ भूलकर उनमें रम जाता है । मानव व प्रकृति का सम्बन्ध प्राचीनकाल से ही अवलोकनीय है । वैदिक काल से ही प्रकृति ने काव्य–सृजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है । हिन्दी जगत के समग्र साहित्य में प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य का चित्रण मिलता है । हम कह सकते हैं कि कवियों को प्रारम्भ से ही प्रकृति अपनी ओर आकर्षित करती आयी है ।

मनुष्य स्वभाव से ही सौन्दर्य–प्रेमी है, इसलिए काव्य सृजन के समय उसने प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य का चित्रांकन किया है । प्राकृतिक सौंदर्य से तात्पर्य उन वस्तुओं के वर्णन से जो मानव निर्मित न होकर नैसर्गिक हो; जैसे – आकाश, सागर, पृथ्वी, वन पर्वत, सरिता, मेघ, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र, रात–दिन, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे आदि ।

प्राकृतिक सौन्दर्य में फूलों की अनुपम छटा का महत्वपूर्ण स्थान है । जिस प्रकार फूल खिलते हैं तो काटों की चुभन का भी एहसास होता है ।

ठीक उसी प्रकार मानव जीवन में भी सुख–दुःख का आवागमन निरंतर होता रहता है । यही कारण हैं कि मानव जीवन की सुख दुखात्मक प्रवृतियों के चित्रण में प्राकृतिक सौंदर्य हमेशा प्रेरणा श्रोत रहा है जिसके कारण मनुष्य अपने उद्देश्य को प्राप्त करता है । सहृदय कवि प्रकृति के सुंदर व उग्र दोनों रूपों को अपने साहित्य में स्थान देता है । इसी संदर्भ में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्राकृतिक दृश्य का चित्रण करते हुए लिखा है –

"प्रकृति हमारे सामने आती है – कहीं बेडौल मधु सुसज्जित या सुन्दर रूप में कहीं रूखे या कर्कश रूप में, कहीं भव्य, विशाल रूप में या विचित्र रूप में, कहीं उग्र रूप में कराल और भयंकर रूप में । सच्चे कवि का हृदय उनके इन सब रूपों में लीन होता है ।"

प्रकृति और मानव का अभिन्न संबंध हैं । प्राकृतिक स्वरूपों से गुजरता हुआ मानव विकास की ओर अग्रसर होता है । मानव–समाज में सर्वाधिक संवेदनशील कवि हैं जिसे प्राकृतिक वातावरण निरंतर प्रभावित करता है । महाकवि आदेश ने अपने काव्य में प्राकृतिक दृश्यों का स्थूल से लेकर सूक्ष्म सभी रूपों का सहज चित्रण किया है । उनकी दृष्टि ने भौतिक–जैविक, चर–अचर, जड–चेतन, अमंगलकारी – मंगलकारी आदि प्राकृतिक रूपों का समावेश अपने काव्य में किया है ।

महाकवि का प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम उनकी समस्त कृतियों में चित्रित हुआ है । उनके हृदय में प्रकृति के प्रत्येक अंग के प्रति गहन अनुराग है । आदेश जी के काव्य में प्राकृतिक–प्रेम के अन्तर्गत वानस्पतिक एवं जीव जंतु के प्रति अगाध प्रेम दिखाई देता है ।

(ख) वानस्पतिक – वनस्पति के अन्तर्गत पेड़–पौधे, फल–फूल, लता, घास आदि आते हैं । वानस्पतिक मानव जीवन का मूलाधार है । प्रकृति जहाँ एक और मानव जीवन की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है । वहीं दूसरी ओर

मानव जी ऐन्द्रिय सुख प्रदान करती है । भारतीय वनस्पति के प्रति कवि का अतिशय प्रेम दृष्टिगोचर होता है । आदेश जी की कविता बहकते कलाकार में वनस्पति को आधार रूप में ग्रहण कर गुरु की उद्‌बोधक शक्ति का चित्रण करती है ।

आदेश जी ने प्रकृति को मनमोहक रूप में चित्रित करते हुए धरावधू के सौंदर्य में पुष्प महत्व को परिलक्षित करते हुए लिखा है–

"सुरसरि के समीप ही सुन्दर,
सुमन–सदन था सुस्थित ।
मानो सुधर धरावधू का,
चूड़ा हो पुष्प विनिर्मित ।।"

'जिन्दगी' कविता में कवि ने मौत को जिन्दगी का फूल मानते हुए लिखा है –

"जिन्दगी कठिनाइयों का नाम है।
मौत कहते हैं जिसे,
वह जिन्दगी का फूल है ।
जिन्दगी को भार समझे,
यह बड़ी ही भूल है ।"

कवि ने 'देवालय' कृति में वृक्ष की एक शाखा को मानवीकृत रूप में चित्रित करते हुए लिखा है–

"वृक्ष की है शाख ।
क्यों निर्भीत–सी
बिल्कुल अकेली
पूर्णतः
निर्वस्त्र–सी

होकर खड़ी हो?"

आदेश जी ने प्रकृति का चित्रण करते हुए नारी की सुन्दरता को मलय पवन व गुलाब की पंखुड़ियों के सदृश माना है –

"मलय–पवन परिरंभित ज्यूं
झरती गुलाब–पंखुडियाँ
श्रुति–सुगन्ध से सुरभित मानो
चुनी गयी स्वर–मणियाँ ।।"

आदेश जी ने कविता में स्वयं प्रश्न करके उसका उत्तर साथ देते हुए वनस्पति के विषय में लिखा है –

"वनस्पतियों की उपज है
वनस्पति ही तो कहाती
इस जगत में ।"

कवि ने उपर्युक्त पंक्तियों में स्पष्ट किया है कि संसार में जो भी वनस्पति है उससे वनस्पति का ही जन्म होता है । उसी प्रकार मानव मन में विभिन्न भावों का जन्म होता रहता है कवि प्रकृति के माध्यम से मानवीय भावनाओं को जाग्रत करना चाहता है। कवि ने पुष्प का चित्रण करते हुए लिखा है कि जिस प्रकार पुष्प सभी के मन को अपनी ओर आकर्षित करता है । उसी प्रकार प्रकृति का सुरम्य वातावरण निरन्तर आनन्दानुभूति कराता रहता है। वह दुःखों से दूर रखता है –

"तुम पुष्प चयन करती हो,
वन–उपवन की
वल्लरियों और विटपों से
शूल की सीमाओं से निकालकर
सजाती हो,

पुष्प–पात्रों में ।

जो मोहते हैं

हर दर्शक,

हर आगत का मन ।।"

आदेश जी ने अपनी कृति 'शतदल' में जीवन के यथार्थ का चित्रण प्रकृति के सम्बन्ध से जोड़ते हुए लिखा है ।

महाकवि ने प्राकृतिक मनभावन दृश्यों का चित्रण करते हुए पतझड़ के कारण पत्रविहीन वृक्ष तथा वनस्पतियों के विवर्ण होने का सहज और स्वाभाविक रूप प्रस्तुत किया है –

"पतझड़ आया झर चले पात ।

हो चला क्षीण रवि का आतप ।

हो चले विवर्ण पुहुप–पादप ।

हो चले शिथिल–गति जल–प्रताप ।।"

प्रो० आदेश ने उपर्युक्त पक्तियों में निरंतर परिवर्तन के कारण वानस्पतिक प्रभाव को परिलक्षित किया है । जिस प्रकार मानव–जीवन में सुख–दुःख आते रहते हैं, ठीक उसी प्रकार वनस्पतियों पर भी पतझर व बसन्त ऋतु का प्रभाव पड़ता है ।

आदेश जी ने मानवीय अभिव्यक्ति के प्रकृति के सुरम्य वातावरण को प्रभावशाली बताया है । वे टयूलिप के फूल व प्लम के पेड़ का मनोहारी दृश्य उपस्थित करते हुए कहते हैं –

"नारंगी–सित–लाल पित, बैंगनी, ऋतु–अनुकूल ।

मन की रह–रह मोहते, सखि । टयूलिप के फूल ।।

देखो प्लम के पेड़ पर, फूल उगे हैं श्वेत ।

किन्तु प्रकृति–षडयंत्र–वश, फल होंगे अश्वेत ।।"

कवि ने मानव मन की अभिव्यक्ति को प्रकृति के माध्यम से और सरसता और सहज प्रदान की है –

"गेहूं–मक्का की बालों पर
झूलूंगा झूला डाल–डाल ।
मेरे मद से मतवाली हो,
फसलें हो जाएंगी निहाल ।।"

उपर्युक्त विवेचनोपरांत संक्षेप में कह सकते हैं कि आदेश जी की समस्त कृतियों में वनस्पतिक स्वरूप और प्रेम का प्रकृति के माध्यम से सहज और स्वाभाविक वर्णन कवि द्वारा किया गया है । कवि ने पेड़–पौधे, फल–फूल, लता आदि के माध्यम से मानव जीवन को आदर्श रूप प्रदान करने के लिए मनुष्य का आंतरिक भावनाओं को प्रेरित करने का प्रयास किया है । कवि का वानस्पतिक प्रेम उनकी समस्त कृतियों में सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। कवि कहीं पर मानवीय सौंदर्य के दर्शन कराता है तो कहीं उपदेशात्मक संदेश के माध्यम से वानस्पतिक चित्रण प्रस्तुत करता है।

(ग) जीव–जन्तुक – प्रकृति में पेड़–पौधों की तरह पशु–पक्षियों का भी महत्वपूर्ण स्थान है । वन–उपवन में विचरण करने वाले पशु–पक्षी है । पशु–पक्षी, जीव–जन्तु के अन्तर्गत आते हैं । आदेश जी का पशु–पक्षियों के प्रति विशेष लगाव रहा है जो उनकी कृतियों में सर्वत्र परिलक्षित होता है।

आदेश जी ने अपनी कृति 'लहरों का संगीत' में जीवन के निरन्तर गतिमान पक्ष को उजागर करते हुए मानव को सतत् प्रयास करने की प्रेरणा देते हुए लिखा है –

"पशु–पक्षी ग्रह को आते हैं
मधुर गीत तारक आते हैं,
श्वासों को पगडंडी पर थक,

रूक–रूक कर जीवन चलता है ।"[1]

आदेश की कविता में भावों को अतल गहराई एवं संवेदना का अप्रतिम स्वरूप है । कवि ने दो वस्तुओं की तुलना करते हुए समान धर्मी होने के कारण भी एक वस्तु को प्रिय तथा दूसरे को अप्रिय मानने के कारण स्पष्ट करने का प्रयास करते हुए लिखा है–

"तोडते शूल पर गुलों को मना करते हो ।
पालते काक बुलबुलों को मना करते हो ।
द्राक्षा, अख चूसते हो । किन्तु रस है निषिद्ध,
गुड़ तो खाते हो । गुलगुलों को मना करते हो ।।"[2]

कवि ने रामराज्य की कल्पना करते हुए आनंदानुभूति को इस प्रकार व्यक्त किया है –

"पशु–पक्षी सब मोद मनाते
हैं, यूँ पुलकित होकर ।
राम–राज्य में रहते ज्यूँ,
जन–गण आनन्दित होकर ।।"[3]

कवि ने रामराज्य का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि प्रत्येक नागरिक के मन में आनन्द की लहर दौड़ती थी । ठीक उसी प्रकार पशु–पक्षी भी सौन्दर्य को देखकर पुलकित हो उठते हैं ।

आदेश ने 'शकुन्तला' कृति में दिवस के आगमन पर प्रकृति के परिवर्तनों एवं जीव–जन्तु के क्रिया कलापों को अभिव्यक्त करते हुए लिखा है –

"सौ गए हैं श्वान, स्यार, उलूक सारे ।
जागृति देते जिन्हें थे, मूक तारे ।

---

[1] प्रो० हरिशंकर आदेश, लहरों का संगीत, पृ० 93
[2] प्रो० हरिशंकर आदेश, शतदल, पृ० 136
[3] प्रो० हरिशंकर, अनुराग, पृ० 20

जग गए तमचुर, लिए नूतन तराने ।।"[4]

कवि ने नारी–सौन्दर्य की अभिव्यक्ति के लिए जीव–जन्तुओं को आधार रूप में ग्रहण किया है –

"शावक से शैशव लेकर,
भृंगों से ले चंचलता ।
मत्स्याओं से आकृति ले,
हँसती भी चपल सरलता ।।"[5]

'प्रश्न' कविता में आदेश जी ने प्रकृति के नियमों को स्पष्ट करते हुए लिखा है जिस प्रकार मानव की सन्तान मानव होती है ठीक उसी प्रकार पशु की सन्तान पशु ही कहलाती है –

"जबकि
पशु का शिशु
सदा ही पशु कहता,
और,
जब सन्तान मानव की
कहती है मनुज ही ।।"[6]

आदेश जी की कविताओं में जीवन–अनुभव और दृढ़ निश्चय का भाव सर्वत्र विद्यमान हैं । कवि ने अपने अनुभवों के आधार पर मानव के बहकते कदमों को रोकते हुए उनका दिशा–निर्देश किया है–

"जब भरी नाभि में कस्तूरी,
ओं हरिण, भटकता क्यों चहुँदिशि?
क्यों व्यर्थ व्यथित हो तृष्णा से,

---

[4] प्रो० हरिशंकर आदेश, शकुंतला, पृ० 227
[5] प्रो० हरिशंकर आदेश, अनुराग, पृ० 42
[6] प्रो० हरिशंकर आदेश, कविता का अर्द्धकुभं : जीवन की अर्द्धशती, पृ० 37

रहता उदास तू वासर निशि?

कर एक ब्रह्म का आराधन,

तू द्वैतवाद से काम न ले ।।"[7]

'शकुन्तला' कृति में आदेश जी ने शकुन्तला के बचपन के मित्रों का वर्णन मनोहारी रूप में प्रस्तुत किया है –

"ये भिन्न–भिन्न के पादप और लताएँ ।

ये धेनु–वत्स, मृग–शावक, वन–वनिताएँ ।

ये शुक–सारिका, कपोत, कोकिला खग–दल ।

है परम मित्र शैशव–सहचर सरिताएँ ।।"[8]

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने शकुन्तला के जीव–जन्तुओं के प्रति लगाव को अभिव्यक्ति दी है ।

शकुन्तला दुष्यन्त से अपने परम मित्रों–गाय, मृग, तोता, कबूतर और कोयल आदि के बारे में बताती है ।

कवि ने मानव मन की कल्पनाओं की तुलना पक्षी से करते हुए हृदयगतही रूप प्रस्तुत किया है –

"प्राण कहते हैं

उड़ चलो,

दूर उड़ती हुई उन आबाबीलों की तरह

पर पंख कहाँ हैं?

हमसे अच्छे तो यह पक्षी हैं ।

मन चीत्कार करता है

साँसे उफनती हैं ।"[9]

---

[7] प्रो० हरिशंकर आदेश, शतदल, पृ० 56

[8] प्रो० हरिशंकर आदेश, शकुंतला, पृ० 174

[9] प्रो० हरिशंकर आदेश, देवालय, पृ० 29

प्रो० हरिशंकर आदेश की कविताओं में जीव–जन्तुओं के प्रति आकर्षण स्पष्ट झलकता है । उन्होंने अपनी कविता 'समय का कुत्ता' में इस संसार को पागल कुत्तों की बस्ती बताते हुए लिखा है –

"जग पागल कुत्तों की बस्ती ।
पशुता ही है, जिसमें हँसती ।
धन–बल का मद छाया सब पर
बिकती है नैतिकता सस्ती ।।"[10]

चातक जिस तरह मिलन–मल्हार गाता रहता है, ठीक उसी प्रकार चातक को माध्यम बनाकर आदेश जी ने मुमताज के भावों को अभिव्यक्ति प्रदान की है –

"प्रिय चातक के स्वर में मिलकर
गाऊँगी मैं मिल–मल्हार ।
दूर क्षितिज में नभ बन करने,
आऊँगी धरती को प्यार ।।"[11]

आदेश जी ने तितली का वर्णन करते हुए कहा है कि तितली वन–उपवन में जहाँ भी जाती है हर किसी के मन को मोह लेती है–

"तितली! तितली! मनहर तितली!
उड़ती फिरती मचली–मचली ।।
वन–वन उपवन–उपवन जाकर,
रास रचाती रह–रह तितली ।।"[12]

आदेश जी की अधिकांश कविताओं में जीव–जन्तुओं की प्रति लगाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है –

---

[10] प्रो० हरिशंकर आदेश, नियति के चरण, पृ० 62
[11] प्रो० हरिशंकर आदेश, मनोव्यथा, पृ० 23
[12] प्रो० हरिशंकर आदेश, वेणु, पृ० 11

"चींटी के पर उग आये,

खुडखुडुआ बटिये की दौड़ा ।

मांदो में सोये शेरों की,

करने को आया घोड़ा ।।"[13]

संसार में सभी के कर्म और स्थान निश्चित होते हैं । कोई किसी की जगह नहीं ले सकता है इसी बात को दर्शाते हुए आदेश जी ने लिखा है कि प्रत्येक जीव–जन्तु का अपना अलग स्वरूप होता है –

"सिंह न बनता भेडिया, गर्दभ

बने न अश्व ।

दीर्घ दीर्घ रहता सदा, ह्रस्व सदा हो ह्रस्व ।।"[14]

'निर्मल सप्तशती' में कवि ने नारी के सौन्दर्य की उपमा शुक्र और मीन से देते हुए कहा है –

"तोते जैसी नासिका, लोचन मानो मीन ।

क्यारी ज्यूं आरुण्य की, मुख पर खिली अदीन ।।"[15]

महाकवि आदेश ने मकड़ी के माध्यम से अपने भावों को सशक्तता प्रदान की है । उन्होंने कहा है कि जिस प्रकार मकड़ी निरन्तर गिरती व चढ़ती रहती है । फिर भी धैर्य का त्याग नहीं करती । ठीक उसी प्रकार मानव को भी निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए –

"चढ़ती–गिरती, कभी फिसलती,

अपना साहस कभी न तजती,

गिर–गिर कर उठ जाती मकड़ी ।।"[16]

---

[13] प्रो० हरिशंकर आदेश, लहू और सिंदूर, पृ० 80

[14] प्रो० हरिशंकर आदेश, आदेश सप्तशती, पृ० 56

[15] प्रो० हरिशंकर आदेश, निर्मल सप्तशती, पृ० 49

[16] प्रो० हरिशंकर आदेश, वेणु, पृ० 13

राष्ट्रीय भावना में बहकर कवि देशों में क्रांति लाने की अभिलाषा करता है । चारों और फैले विषाक्त वातावरण को सरल तथा सहज बनाकर प्रेम–संचार कर सभी को आंदोलित करना चाहता है । वह सिंह के माध्यम से मनुष्य को क्रांति के लिए उद्वेलित करता है –

"मुझे न चाहिए आज लता की मंजु ।
मुझे न आज चाहिए मुकेश के से गान ।
मुझे तो आज सिंह सी हुंकार चाहिए ।।"[17]

सहृदय कवि को विविध कृतियों में जीव–जंतुक के प्रति प्रेमभाव के दर्शन होते हैं । प्रो० आदेश के साहित्य में जीव–जंतुक की बहुरंगी उपस्थिति में जहाँ प्राणि प्रेम की तरलता दिखाई देती है वहीं भाव–प्रवणता और अभिव्यक्ति को स्पष्टता प्राप्त होती है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामलखन शुक्ल हिन्दी उपन्यास कला, सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली–7, प्रथम संस्करण–1972
2. रमेशकुन्तल मेघ 'अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा' दि मैकमिलन कम्पनी, नई दिल्ली–1973
3. डॉ0 लक्ष्मी नारायण लाल हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास, साहित्य भवन प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण–1967
4. डॉ0 शोभा वेरेकर 'साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों का शिल्प विधान' प्रथम संस्करण–2001

[17] प्रो० हरिशंकर आदेश, प्रवासी की पाती, भारतमाता के नाम, पृ० 80

5. डॉ0 शिवशंकर पाण्डेय — स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी 'कथ्य और शिल्प'
आलेख प्रकाशन, नवीन शाहदरा,
प्रथम संस्करण–1978

6. डॉ0 सत्यपाल चुघ — प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि,
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
प्रथम संस्करण–1968